B - II
L - 25
Ancient history

⇒ मौर्य काल के बाद → **मौर्योत्तर काल**
↓
अंतिम शासक -
बृहद्रथ
↓
इसकी हत्या पुष्यमित्र शुंग द्वारा होती है। → शुंग वंश

⇒ **शुंग वंश (187 - 75) ई.पू.**

संस्थापक → पुष्यमित्र शुंग
↳ संस्कृत का चरमोत्कर्ष
↳ अश्वमेध यज्ञ किया
↳ मुख्य पुरोहित → पतंजलि → रचना → महाभाष्य ← टीका है ← संस्कृत व्याकरण की प्रथम पुस्तक अष्टाध्यायी का

जानकारी का स्रोत ⇓ अयोध्या अभिलेख (धनदेव का)

→ मनुस्मृति को अंतिम रूप दिया गया
↳ टीका → मिताक्षरा (विज्ञानेश्वर)

→ विदिशा (MP) ज्ञान के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था।

⇒ 9वें शासक - भागभद्र
↳ शासनकाल के 14 वें वर्ष यूनानी दूत हेलियोडोरस आया था
↳ विदिशा (बेसनगर) में गरुड़ ध्वज स्थापित किया (गरुड़ स्तम्भ)
परमभागवत की उपाधि ग्रहण की

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

↳ गरुड़ विष्णु जी का वाहन है,
↓
वैष्णव
↳ भागवत
↓
अतः भागवत धर्म लोकप्रीय था

मौर्य काल	मौर्योत्तर काल ⇓ शुंग काल
→ स्तूप कच्ची ईंट से बनाये जाते थे। ⟶	पत्थरों का प्रयोग किया गया ⇓ 1873 में कनिंघम ने भरहुत स्तूप की खोज की ↓ एवं शुंग काल मे इस स्तूप की वेदिका (Railing) बनाई गई। ⇓
- सांची के स्तूप की रैलिंग लकड़ी की लगाई गयी ⟶	शुंग काल में सांची के स्तूप की रैलिंग पत्थर की लगाई गई।

⇒ शुंग कालीन कला के उदाहरण

1- गरुड़ ध्वज
2. भाजा का चैत्य एवं विहार
↓ चैत्य — पूजा स्थल
↓ विहार — निवास स्थान
3. अजन्ता का 9 वां चैत्य मंदिर
4. नासिक तथा कार्ले का चैत्य
5. मथुरा में यक्ष - यक्षिणी की मूर्ति

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Note

- पुष्यमित्र शुंग के समय यवनों का आक्रमण हुआ था। एवं पुष्यमित्र ने यवनों को पराजित किया था। इसकी जानकारी कालिदास के "मालविकाग्निमित्र" में मिलती है।

⇒ शुंग वंश का अंतिम शासक

↳ देवभूति ← इसकी हत्या इसके सचिव वसुदेव द्वारा होती है

↓

कण्व वंश की नींव रखी
(लगभग 75 ई.पू.)

⇒ सातवाहन वंश

जानकारी के स्रोत-

1- पुराणों में इनको आंध्र जातीय या आन्ध्र भृत्य कहा गया है।

2. मत्स्य पुराण व वायु पुराण

3. नागनिका का नानाघाट अभिलेख
 - भारत का पहला तिथित अभिलेख

सातवाहन ⇓ ~200 ई.पू. ⇓

[कर मुक्त भू-अनुदान] ⇓ सर्वप्रथम ब्राह्मणों को

— बाद में → [भूमि अनुदान] ⇓ बौद्ध, जैन

→ [वेतन के बदले भूमि-अनुदान] ← केन्द्र शक्तिशाली ← गुप्त काल

→ केन्द्र कमजोर (विकेन्द्रीकरण के कारण)

हर्षवर्धन काल → सामन्तवाद ⇓

→ [जिनको अनुदान मिला उन्होंने अपने को भू-स्वामी घोषित किया] ⇓ कृषक बने कृषक मजदूर ⇓ बाद में ⇓ दास

पूर्व मध्य काल

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

⇒ सामंतवाद के उदय की पृष्ठभूमि सातवाहन काल में मिलती है।

⇒ सातवाहन वंश

↳ भाषा - प्राकृत (मराठी प्राकृत)
संस्थापक - सिमुक (मत्स्य पुराण)
राजधानी - धान्यकटक (आन्ध्रप्रदेश)/पैठन/प्रतिष्ठान

→ नागनिका का नानाघाट अभिलेख
⇓ सिमुक की पुत्रवधु
↳ सिमुक की जानकारी
↳ सिमुक का चित्र मिला

→ सिमुक के उत्तराधिकारी → सातकर्णी-I
⇓
- सातवाहन वंश का वास्तविक संस्थापक
- पत्नी → नागनिका

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ सातकर्णी-I

↳ 2 अश्व मेध यज्ञ किया
↳ चांदी का सिक्का जारी किया
↳ अश्व का चित्र बना है।
↳ उपाधि - दक्षिणाधिपति
- अप्रतिहितचक्र

⇒ शासक - हाल

↳ यदि सातकर्णी-I युद्ध में महान राजा थे तो "हाल" शांति में महान राजा थे।
↳ हाल ने प्राकृत भाषा में गाथासप्तसती की रचना की

↳ हाल स्वंय कवि थे तथा विद्वानों को संरक्षण भी देते थे – बृहतकथा के रचयिता गुणाढ्य रहते थे।
↓
(पैशाची संस्कृत में लिखी गयी है)
- कातन्त्र के लेखक सर्ववर्मन को संरक्षण
↳ संस्कृत व्याकरण की पुस्तक

→ बृहतकथा को आन्ध्र का महाभारत कहा जाता है।

⇒ सातवाहनों का पुनः प्रकाश युग

↳ शुरुआत – गौतमीपुत्र शातकर्णी
स्रोत – नासिक अभिलेख
- नासिक प्रशस्ति
- कार्ले अभिलेख

गौतमी पुत्र शातकर्णी ने शकों के शासक नहपान को पराजित किया
↓
- अजकालकीय गांव दान में दिया
↳ भू-दान का प्रथम साक्ष्य
- कार्ले के भिक्षुओं को करजक गांव दान में दिया
- जोगलथम्बी (MH) से सिक्कों का ढेर मिला है।

⇒ वाशिष्ठ पुत्र पुलुमावी

↳ उपाधि – दक्षिणापथेश्वर
- राजधानी – पैठन / प्रतिष्ठान
- प्रथम आंध्र सम्राट कहा जाता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

↳ इनका प्रमुख शत्रु → शक शासक → रुद्रदामन व चष्टन है।

↳ रुद्रदामन का गिरनार अभिलेख
⇓
रुद्रदामन ने पुलुमावी को 2 बार पराजित किया

→ अमरावती स्तूप की रेलिंग को पुलुमावी ने बनवाया था
↳ रेलिंग पर पुलुमावी नाम उत्कीर्ण है।

→ यज्ञ श्री शातकर्णी
↳ सिक्कों पर जलयान का चित्र है

⇒ सातवाहन युगीन संस्कृति

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- सातवाहन युग में दक्कन के भौतिक युगीन संस्कृति का दर्शन होता है।
- करीमनगर (MH) जिले में लोहार की दुकान मिली है जिससे पता चलता है कि लौह उपकरणों का प्रयोग किया गया होगा।
- सातवाहनों के समय सोने का प्रयोग बहुमूल्य धातु के रूप में किया गया होगा क्योंकि इसमें कुषाण शासकों की तरह सोने के सिक्के नही मिले है।
- अधिकांश सिक्के शीशे के हैं। इन्होंने पोटीन, तांबे एवं कांसे के भी सिक्के चलाये।
- इसमें भारी मात्रा में रोमन सिक्के भी मिले हैं जिससे रोमन और सातवाहन के मध्य व्यापार का साक्ष्य मिलता है।

- समाज

- समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था
-> गौतमी पुत्र शातकर्णी ने चातुर्वर्ण्य को स्थापित किया एवं वर्ण संकर को रोका।
- शिल्पियों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था।
  ↳ गांधिक महत्वपूर्ण थे - इत्र बनाते थे
- शिल्पियों का समूह - श्रेणी / श्रेष्ठि
  ↳ कार्यालय - निगम
- व्यापार में तांबे व चांदी के सिक्के का प्रयोग किया जाता था जिसे कर्षापण कहा गया है।

⇒ शब्दावली

- कटक / स्कन्धावार ⟶ सैनिक शिविर or जहाँ - जहाँ पर प्रशासनिक केन्द्र
- गौल्मिक → ग्राम प्रशासन का अधिकारी
- कामान्तिक - भवनों के निर्माण का प्रमुख
- पनियाधारक - नगर में जलव्यवस्था का अधिकारी

⇒ धर्म

-> वैष्णव धर्म की प्रधानता थी।
-> महायान सम्प्रदाय का बोलबाला था।
- नागार्जुनकोंडा तथा अमरावती, सातवाहन और उनके उत्तराधिकारी इक्ष्वाकु के समय धर्म का केन्द्र बन गये।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR